

## कर्मों का खाता – 3

**क**हा गया है, लोभ पाप का बाप। आज के समय में लोभवश बहुत पाप हो रहे हैं। उपभोग के नाम पर हम भोगों के गुलाम बनते जा रहे हैं। कहते हैं कि एक धनी राजकुमार महात्मा बुद्ध के पास पहुँचा और प्रश्न किया, भन्ते, यह बताएँ कि मनुष्य को साधनों का उपभोग कैसे करना चाहिए जिससे उसमें संग्रह की प्रवृत्ति भी न पनपे और आवश्यकताएँ भी पूर्ण होती रहें। महात्मा बुद्ध बोले, मनुष्य को अल्प, सुलभ और निर्दोष – इन तीन व्रतों का पालन करते हुए उपभोग करना चाहिए। अल्प का अर्थ है जितने कम में हमारी आवश्यकताएँ पूर्ण हो जाएँ, सुलभ का अर्थ है, दुर्लभ और अत्यधिक मूल्यवान का उपभोग न करें, निर्दोष का अर्थ है, उपभोग में लाई जाने वाली वस्तु दोषों से रहित अर्थात् ईमानदारी, परिश्रम और सदाचार से प्राप्त की गई हो। जो व्यक्ति इन व्रतों का निष्ठापूर्वक पालन करता है वह कर्मों को करता हुआ भी उनसे न्यारा रह सकता है।

### कर्म की लगाम रखें हाथ में

मानव कर्म करते-करते उसके प्रभाव में आ जाता है। जैसे हम घोड़े पर चढ़ते हैं, लगाम अपने हाथ में रहे तो ठीक, नहीं तो घोड़ा ही हमें जहाँ

चाहे खींच ले जाता है। इसी प्रकार कर्म भी एक प्रकार का घोड़ा है, हम कर्म रूपी घोड़े के मालिक हैं परन्तु फिर भी वह हमें खींच ले जाता है। बुरे कर्म तो त्याज्य हैं ही, सत्कर्म की लगाम भी अपने हाथ में रहनी चाहिए नहीं तो उसमें अहंकार, आसक्ति आदि आने की सम्भावना है। केवल प्रायश्चित से कर्म-बन्धन नहीं छूटता। यह दृढ़ संकल्प हो कि ऐसा बुरा कर्म हमसे फिर कभी ना हो। जो बुरा हुआ उसके बदले 100 गुणा अच्छा कर्म करना है। यदि बुरे का बुरा परिणाम निकले तो उसे समभाव से चुक्ता करना है।

### औषधि की तरह ग्रहण करें कर्मफल को

यदि कर्म को अनासक्त भाव से, न्यारे और साक्षी होकर भोग लिया तो वह आगे और फल नहीं देगा। भविष्य में फिर नहीं बांधेगा। नहीं तो कर्मफल में आसक्ति से पुनः कर्मबन्धन, उस कर्मबन्धन से पुनः कर्मफल और पुनः उसमें आसक्ति से पुनः कर्मबन्धन – यह दुष्चक्र चलता रहेगा। कई लोग महफिल लगाकर शौक से शराब पीते हैं और दूसरा व्यक्ति कड़वी दवा को डॉक्टर की राय से पीता है। दोनों के पीने में अन्तर है। एक पीने में आसक्त

है, बार-बार पीना चाहता है, दूसरा रोग-निवारण की मजबूरी से, अनासक्ति से पीता है। समझदार व्यक्ति कर्मफल को आवश्यक औषधि की तरह ग्रहण करता है, वह दुख-सुख को भोगता नहीं बल्कि उनसे न्यारा रहता है। वह रमता नहीं, साक्षी होकर पास करता है और भार हलका कर लेता है। कर्मबन्धन के दुष्चक्र से बाहर आने का मार्ग यही है।

### कर्म का फल देना, कर्म का समापन है

कर्म का फल सामने आना एक प्रकार से किए हुए कर्म का समापनकाल है। जैसे गोभी का फूल निकला, उसके बाद पौधे का क्षय होना निश्चित है। कर्म तो समापन की ओर है पर हम उसकी राख में से वैसे ही दुखदाई नए अंकुर उपजाने के लिए उस कर्मफल में लिप्त हो जाते हैं, उस के प्रकट होने पर सुखी या दुखी हो जाते हैं, यह सबसे बड़ा अज्ञान है। जैसे शरीर को जब रोग आता है तब परहेज से रहेंगे तो जल्दी रोग चला जाएगा पर यदि सोचेंगे कि दाल-रोटी खाने की इच्छा नहीं हो रही, कुछ चटपटा खाऊँ तो रोग बैठ जाएगा। इन्द्रियों को नियन्त्रण में रखा तो रोग गया, इन्द्रियों के नियन्त्रण में रहे तो

रोग बैठ गया। इसी प्रकार कर्मफल के समय इन्द्रियों को वश में रखा तो कर्म, फल देकर नष्ट हो गया। यदि इन्द्रियों के वश हो गए तो कर्मफल में से नवीन कर्मबन्धन जुट जायेगा।

### भुगतना अर्थात् कर्मों का भुगतान करना

जब हम बाज़ार से कोई चीज़ खरीदते हैं तो उसकी कीमत का भुगतान (Payment) करते हैं। भुगतान का अर्थ है जो वस्तु खरीदी गई थी उसका हिसाब चुक्ता हो गया है। भुगतान शब्द का ही मिलता-जुलता शब्द हम व्यवहार में भी प्रयोग करते हैं। मान लीजिए, कोई व्यक्ति हमें परेशान या बोल्लिल या दुखी कर रहा हो तो मुख से निकलता है, इसे कब तक भुगतना है या फिर कहते हैं, हे भगवान, अब यह और नहीं भुगता जा सकता, इससे पीछा छुड़ाओ। यहाँ भुगतने का अर्थ है सहन करना। सहना भी एक प्रकार से कार्मिक हिसाब-किताब को चुक्ता करने का तरीका है। कब तक भुगतने का अर्थ है कब तक सहना है? इसका उत्तर है, जब तक कर्म का कर्ज उतरे तब तक अपने कर्मों द्वारा उसका भुगतान करते जाना है। लेकिन जैसे कोई कर्ज उतरता है तो कर्जदार को खुशी होती है कि मेरा भार उतर रहा है। उसे ज्ञान रहता है कि पहले लाख रुपये थे कर्ज के, अब मात्र 20 हजार बचे हैं, इस ज्ञान से उसे खुशी होती है। हमें भी जब

यह ज्ञान हो जाता है कि हमारे 63 जन्मों के कर्म कट रहे हैं तो दुख की परिस्थिति में भी, तीनों कालों का ज्ञान होने के कारण, हल्का होने, कर्ज उतरने की खुशी होती है। यदि हम केवल एक काल में जीते हैं अर्थात् वर्तमान में जीते हैं तो वर्तमान के दुख-सुख के अधीन हो जाते हैं। यदि आत्मा के तीनों कालों की स्मृति में रहते हैं तो वर्तमान को साक्षी होकर देखते हैं और प्रसन्नचित्त रह पाते हैं।

### अंकुश शरीर पर नहीं, मन पर

कई लोग सोचते हैं, कर्म ही ना करें तो कर्मबन्धन बांधेगा कैसे? पर कर्म का त्याग सम्भव कैसे होगा? खाना, पीना, कमाना, सुनना, सुनाना बन्द कर देंगे पर मन का व्यापार तो फिर भी चलता रहेगा। वास्तविक कर्मबन्धन तो मन की रजोगुणी और तमोगुणी सोच से ही बनता है। इसलिए शरीर पर अंकुश नहीं, मन की तमोगुणी वृत्तियों पर अंकुश चाहिए। भगवान शिव कहते हैं, अपनी वृत्ति, दृष्टि, कृति को बेहद की बनाओ। आत्माओं प्रति रहमदिल और दाता बन कुछ न कुछ दो। अब हृद की छोटी-छोटी बातों में, स्वभाव-संस्कार में समय नहीं गंवाओ। दृढ़ संकल्प का दीप जलाओ। इन्द्रियों का दमन नहीं, इन्द्रियों का संयम साधो।

### विपरीत परिस्थिति में गुणों को कसकर पकड़ें

कई लोग कहते हैं कि हम ईमानदार, सच्चे और मेहनती बनना

तो चाहते हैं परन्तु हमारी हँसी उड़ाई जाती है, ताने सुनने को मिलते हैं, किसी का सहयोग नहीं मिलता, फिर इन गुणों को धारण करने का उमंग फीका पड़ जाता है। मान लीजिए, हमने धूप में गेहूँ सूखने के लिए डाले और इतनी देर में बरसात आ गई तो हम गेहूँ समेटते हैं ना। यह तो नहीं कह देते कि मैं क्या करूँ, बरसात हो गई, मैं तो सूखाना चाहता था, मेरी क्या गलती है, आप बरसात को रोको। हम ऐसा कभी नहीं कहेंगे। हम जानते हैं, प्रकृति पर हमारा कोई ज़ोर नहीं चलता। हम उसे नहीं बदल सकते हैं, हाँ, अपने को बदल सकते हैं और हर बार अपने को ही बदलते हैं। कड़ी धूप में छाता लेते हैं, ठण्ड में शाल, स्वेटर लेते हैं और कितने ही वर्षों से इस तरह से अपना परिवर्तन करते आ रहे हैं।

जिस तरह बाहरी प्रकृति है इसी प्रकार मानव की आन्तरिक प्रकृति (स्वभाव) भी है। उस प्रकृति के वश यदि कोई कुछ गलत कर रहा है तो क्या उससे हम अपना नुकसान होने दें? या जैसे हमने गेहूँ समेट कर उनका बचाव कर लिया इसी प्रकार हम अपना भी बचाव कर लें। हम दूसरे की प्रकृति को नहीं बदल सकते पर अपने स्वभाव को तो बदल सकते हैं ना। अतः परिस्थितियों के झोंके चाहे कैसे भी हों, हमें अपने कर्मों को बिगड़ने से बचाने का सदैव ध्यान रखना है। यह कार्य हमें ही करना है।

अन्य कोई हमारे लिए यह नहीं कर सकता।

जैसे तेज ठण्डी हवा आ रही हो तो हम अपनी ओढ़ी हुई चद्दर को नहीं उड़ जाने देते, उसे और ज़ोर से कसकर पकड़ लेते हैं, इसी प्रकार परिस्थितियों की आंधी आने पर अपने आन्तरिक गुणों रूपी चद्दर को और ज्यादा कसकर पकड़े रहो। यह नहीं कहो कि कोई सहयोग नहीं देता।

चद्दर को ओढ़े रहने में किसी ने सहयोग दिया क्या? खुद ही कसकर पकड़ा ना। गुणों को भी कसकर पकड़े रहिए। याद रखिए –

कहना नहीं प्रभु से कि समस्या विकट है।  
कह दो समस्या से कि प्रभु मेरे निकट है।।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

## स्वर्ण जयन्ती की शुभ कामनायें



इस वर्ष हम ज्ञानामृत पत्रिका की स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं। शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के द्वारा संकल्प किया कि ऐसी पत्रिका से लाखों आत्माओं का कल्याण होगा। मेरा परम सौभाग्य है कि दिल्ली कृष्णा नगर में रहते आत्म भाई ने वहीं इसकी छपाई की मशीनें स्थापित कीं। पत्रिका ने दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करते हुए इन 50 वर्षों में करोड़ों मनुष्य आत्माओं तक ईश्वरीय संदेश पहुँचाया है।

जैसे बापदादा की महिमा अपरंपार है वैसे ज्ञानामृत पत्रिका की महिमा भी अपरंपार है। इस पत्रिका से सभी को लाभ होता है, प्रेरणा मिलती है जिससे अपने जीवन का परिवर्तन करते हैं। जैसे वाह बाबा वाह! कहते हैं, वैसे वाह ज्ञानामृत वाह! कह सकते हैं। इस सफलता के लिए आत्म प्रकाश भाई, उर्मिला बहन तथा समस्त ज्ञानामृत परिवार को बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो।

– ब्र.कु. दादी कमलमणि,  
सबजोन इंचार्ज, कृष्णा नगर, दिल्ली



जैसे ही ज्ञात हुआ कि यह ज्ञानामृत पत्रिका का स्वर्ण जयन्ती वर्ष है तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा। आँखों के सामने किसी चलचित्र की भाँति अतीत के दृश्य दिखने लगे मानो कल की ही बात हो। 'त्रिमूर्ति' नाम से आरंभ हुई यह पत्रिका बाद में ज्ञानामृत के नाम से विख्यात हुई।

मेरे लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। जैसे ही प्राप्त होती है, इसे पूरा पढ़े बिना मन बेचैन रहता है। मैं अनुभव के साथ यह कहना चाहूँगी कि यह हर घर में, हर व्यक्ति के पास पहुँचनी चाहिए क्योंकि इसमें ज्ञान के साथ-साथ कमज़ोरियों पर विजय प्राप्त करने की अनोखी शक्ति समाहित है और यह जीवन जीने की कला भी सिखाती है।

इसी प्रसंग में मैं कहना चाहूँगी कि ज्ञानामृत हर भाषा-भाषी को मिले। यही कारण है कि हमने उड़िया भाषा में 'ज्ञान दर्पण' के नाम से इसे प्रकाशित कराना प्रारंभ किया ताकि बाबा का ईश्वरीय संदेश जन-जन तक पहुँच सके।

ज्ञानामृत की स्वर्ण जयन्ती पर इसकी अद्भुत सेवाओं के लिए आत्म प्रकाश भाई, उर्मिला बहन एवं समस्त ज्ञानामृत परिवार को हृदय की कोटिशः बधाइयाँ देती हूँ और शुभकामना करती हूँ कि यह पत्रिका दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करे।

– ब्र.कु. कमलेश, सबजोन इंचार्ज, कटक, उड़ीसा